OM 14 FINAL-c_Page 1 and 2 02-10-2014 18:20 Page 2

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक - 14 अक्टूबर - II, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए पथभ्रमित न हो मीडिया

सकारात्मक परिवर्तन के लिए जनसंचार माध्यमों की भूमिका विषय पर चार दिवसीय महासम्मेलन में दो हज़ार मीडियाकर्मियों ने किया विचार-मंथन

मीडिया सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय मंत्री श्रीपद नायक, राजीव रंजन नाग, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. ओम प्रकाश, ब्र.कु. शीलू तथा अन्य।

शांतिवन। आध्यात्मिकता, अंध-विश्वास तथा औपचारिकता का मात्र उदाहरण नहीं है बल्कि शान्ति, प्रेम, सहिष्णुता, भाईचारा आदि का सम्मिलित रूप है। अध्यात्म भारत की आत्मा है, ऐसा विवेचन शांतिवन परिसर में केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्रीपद नायक ने मीडिया सम्मेलन, 'सकारात्मक परिवर्तन के लिए जनसंचार माध्यमों की भूमिका' में दिया। उनका कहना था कि विश्व भर में राजयोग चिंतन भारत की समृद्धि, संस्कृति और लोकाचार का एक अनुपम उदाहरण है। ब्रह्माकुमारीज़ विश्व की एक ऐसी संस्था है जहां नि:स्वार्थ व समरसता के आधार से सबको सम्मान दिया जाता है व सेवा की जाती है। मीडिया महासम्मेलन सकारात्मक बदलाव का मजबूत आधार बनेगा। जिन परिस्थितियों से पूरा देश गुज़र रहा है उनमें परिवर्तन लाने के लिए जनसंचार माध्यमों में सकारात्मकता को प्रोत्साहित किया जाना अति आवश्यक है।

मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष माननीय ब्र.कु. ओम प्रकाश ने कहा कि मीडिया एक मिशन के रूप में आया, लेकिन एक उद्योग के रूप में स्थापित हो गया। मीडिया का मुख्य काम सूचना, शिक्षा और मनोरंजन है। वो चाहे तो इसके माध्यम से अपनी कलम की ताकत को सबके सामने रख सकता है।

इसी क्रम में मीडिया प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. करुणा ने कहा कि मीडिया एक स्तंभ की तरह है और वो स्तंभ अब हिलने लगा है, उसे थमाने की ज़रूरत है। अच्छे दिन लाने के संकल्प में जनता के साथ मीडिया को भी अपनी सहभागिता दर्ज़ करानी चाहिए क्योंकि सत्ता की शक्ति आध्यात्मिकता है, इसलिए जितना आध्यात्मिकता का प्रसार किया जायेगा उतनी सत्ता को सही दिशा मिलेगी। प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि मीडिया एक लोक-आकांक्षा के रूप से शुरु हुआ और बाद में एक बाज़ारवादी सोच पर जाकर खत्म हुआ। अखबार और कलम की ताकत के बारे में उन्होंने प्रमुख कवि एवं व्यंग्यकार राहत इंदौरी साहब का उदाहरण देते हुए कहा कि एक अखबार हूँ मैं, क्या औकात है मेरी। तेरे शहर की नींद उड़ाने के लिए काफी हूँ। जिस दिन आपमें बेचैनी पैदा होगी उस दिन यह अंतराल कम हो जायेगा। साथ ही ब्र.कु. शीलू ने सभा में उपस्थित सभी आगंतुकों एवं मेहमानों को राजयोग का अभ्यास करया।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने अपने आशीर्वचन में इस सम्मेलन को सही रूप से सफल होने की प्रेरणा प्रदान की और कहा कि आध्यात्मिक भूमि कहे जाने वाले भारत में स्वर्ग का स्वरूप तेज़ी से बिगड़ रहा है। नर्क को स्वर्ग बनाने की चुनौती का सामना करने में मीडिया को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

प्रेस परिषद के सदस्य राजीव रंजन नाग, बैंगलोर से आई प्रो. माया चक्रवर्ती, गोवा के पत्रकार सागर जावेड़कर और देवी अहिल्या वि.वि. के विभागाध्यक्ष डॉ. मानसिंह परमार ने कहा कि समाज और देश के हित को सर्वोपरि मानते हुए आप मीडियाकर्मी अपने चिंतन व लेखन में सकारात्मकता लायें। अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए मीडिया प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. शान्तनु ने कहा कि मीडिया स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के अभियान को आगे बढ़ाने में सहयोगी बनेगा।

मीडिया जनतंत्र में एक खबरपालिका के रूप में स्थापित हो

शांतिवन। क्या हम मीडिया कर्मियों को सशक्त कर सकते हैं? इस विषय पर शाम पाँच बजे के सत्र में प्रमुख वक्ता के रूप में महामेधा डेली के सलाहकार संपादक मधुकर द्विवेदी ने कहा कि मीडिया सिर्फ कहने मात्र ही लोकतंत्र का चौथा स्तंभ रह गया है। ऐसा कोई प्रावधान संविधान में नहीं है जिसके तहत

इसको चौथा स्तंभ माना जाये।

उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि मीडिया को न्यायपालिका व कार्यपालिका की तरह अब खबरपालिका बनकर कार्य करना होगा। उन्होंने इसके लिए बहुत सुंदर शायरी के साथ इसको जोड़ा और कहा, धरा बेच देंगे, गगन बेच देंगे, कली बेच देंगे, चमन बेच देंगे। कलम के सिपाही अगर सो गये तो, वतन के मसीहा वतन बेच देंगे। इन्हीं वक्तव्यों से उन्होंने मीडिया कर्मियों के अंदर जोश भरा।

जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सहायक प्रो. डॉ. सुरेश वर्मा ने कहा कि हम वो देखें जो लोग नहीं देख पा रहे हैं, लेकिन हमारी विडंबना ये है कि हम वो नहीं देख पा रहे हैं और हम दुनिया की हाँ में हाँ मिलाते हैं। मीडिया कर्मी को जिज्ञासा, उमंग-उत्साह और निश्चय के साथ आगे बढ़ना चाहिए। उसका अध्ययन कभी रुकना नहीं चाहिए।

कानपुर से आये केशव दत्त चंदोला जो लघु एवं मध्यम न्यूज़ पेपर के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं ने कहा कि हम ब्रह्माकुमारीज़ की तरह जगह-जगह जाकर सभी को जागरुक कर उनके अंदर एक जिज्ञासा पैदा करते हैं कि वे भी बिना रुके, बिना थके अपनी बात कह सकें। उनको सशक्त बनाना ही हम मीडिया कर्मियों का उद्देश्य होना चाहिए।

जयपुर की उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. सुषमा ने सभी को आत्मचिंतन और परमात्मचिंतन के द्वारा कलम में ताकत लाने के लिए राजयोग का सहज अभ्यास कराया। साथ ही साथ प्रतिदिन इस अभ्यास को करने की प्रेरणा दी।

मीडिया कॉन्फ्रेंस में सांस्कृतिक प्रस्तुति देते हुए कलाकार ।

इन साईड पर विशेष...

उठो... सम्पूर्णता आपका आह्वान कर रही है...।
-पेज नं 5 पर...

पावरफुल वन फीलिंग को फिल करो
-पेज नं 2 पर...

दस विकारों को हरा, मनाओ दशहरा
-पेज नं 6 पर..